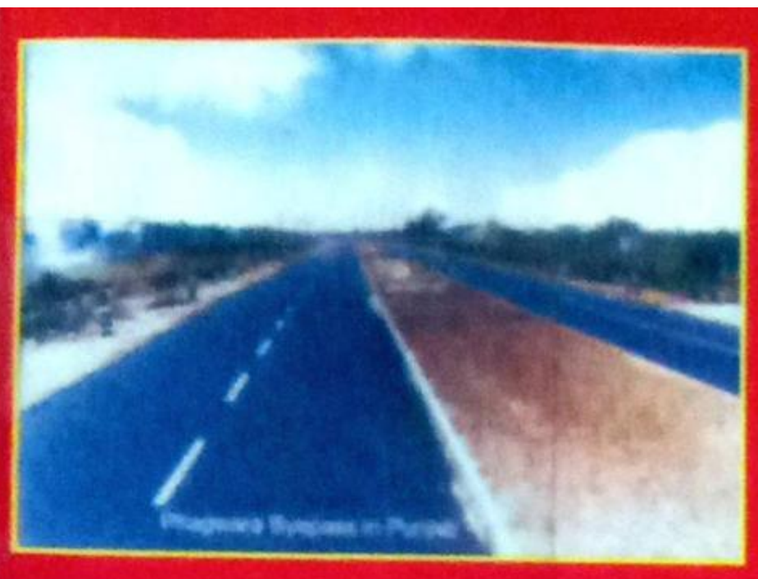

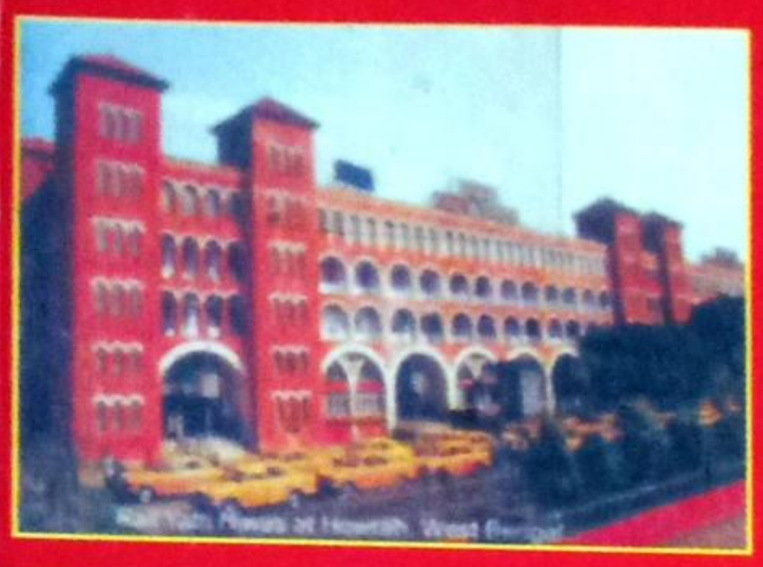

भारत में आर्थिक विकास एंव नीति

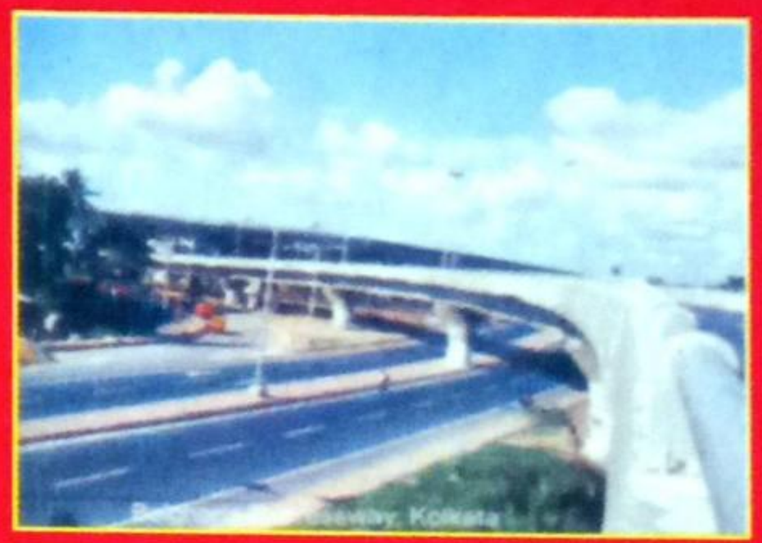

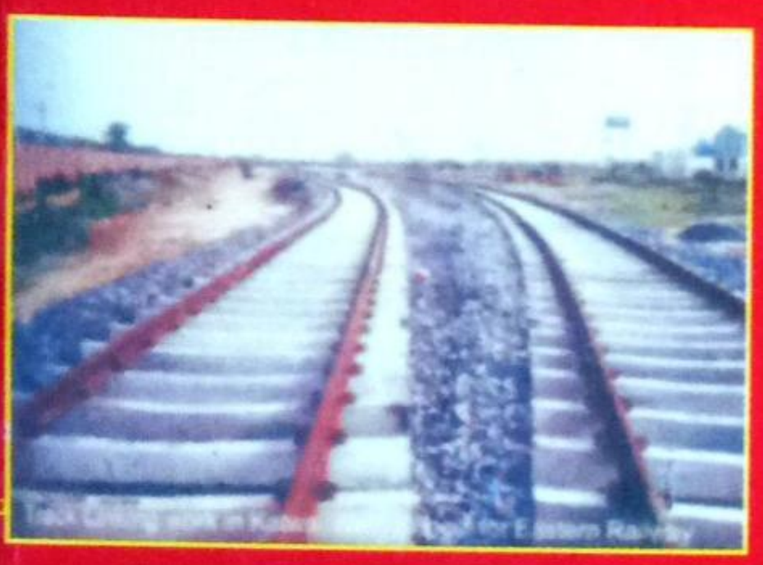

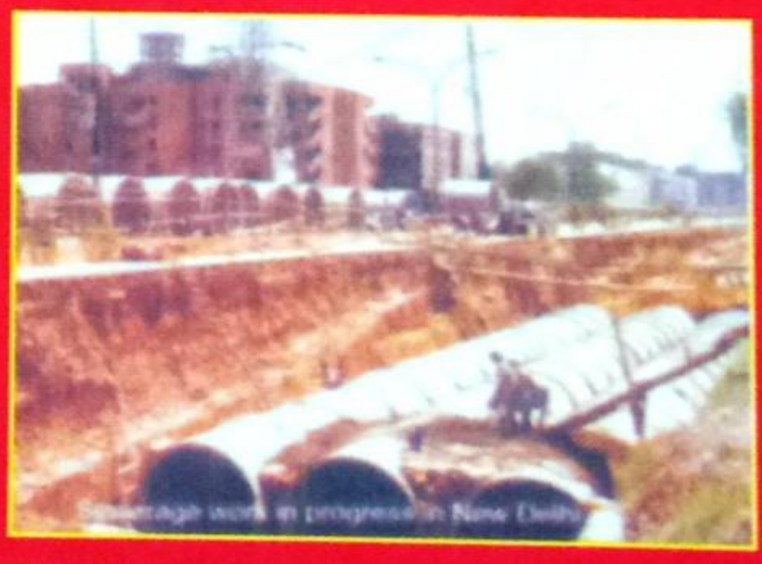

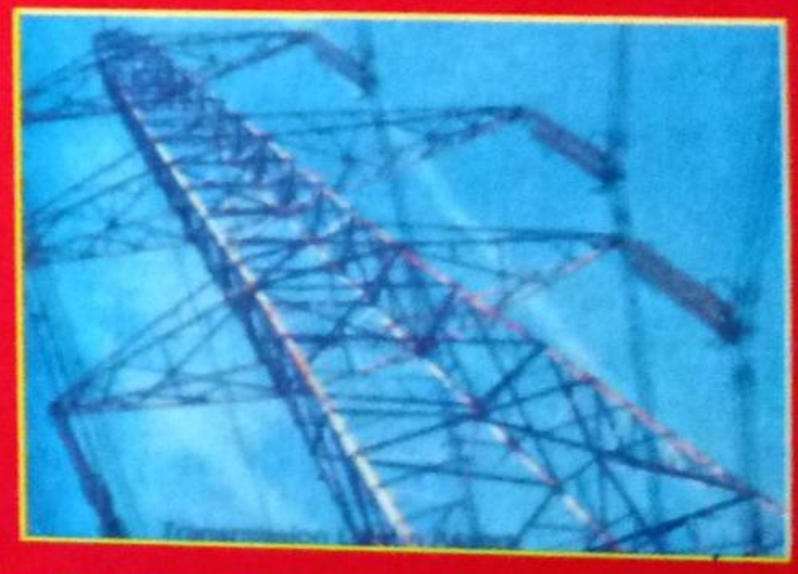

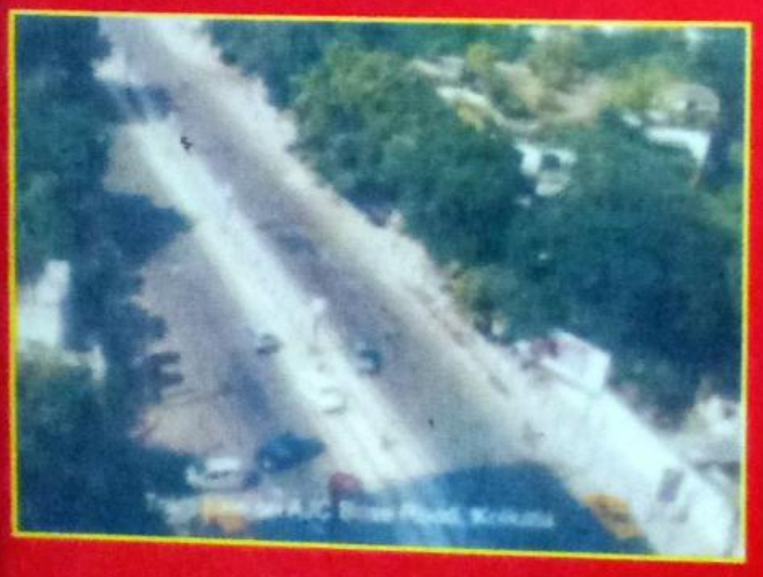

ईश्वर धींगरा
वी. के. गर्ग

Scanned by TapScanner

संक्षिप्त विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
	(खण्ड-क : भारत के संदर्भ में विकास एवं नियोजन की समस्याएँ)	
1.	अल्पविकसित देशों की विशेषताएँ	1–21
2.	आर्थिक विकास के कारक	23–41
3.	जनसंख्या एवं आर्थिक विकास	42–71
4.	रोजगार एवं बेरोजगारी	72–86
5.	भारत में आर्थिक नियोजनः समस्याएँ, उद्देश्य एवं मूल्यांकन	88–114
6.	बचत एवं निवेश का विकास	115–125
7.	भारत में योजनाओं का वित्तीयन	126–138
8.	केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्ध	139–151
	(खण्ड-ख : भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रीय पहलू)	
9.	भारत में कृषि का विकास	155–174
10.	भारत में कृषि वित्त	175–190
11.	कृषि विपणन एवं कृषि पदार्थों का मूल्यन	191–201
12.	भारत में भूमि सुधार, कृषि श्रम एवं तकनीकों का चयन	209–231
13.	भारत में औद्योगिक विकास एवं नीति	232–254
14.	सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की भूमिका	255–275
15.	भारत में लघु-पैमाने के उद्योग	276–289
16.	भारत में विदेशी पूँजी एवं बहु-राष्ट्रीय निगम	290–303
17.	भारत में विदेशी व्यापार एवं भुगतान शेष	304–331
18.	कीमतें : मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियाँ	332–347
	दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रश्न	348–358

Scanned by TapScanner

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
	(खण्ड-क : भारत के संदर्भ में विकास एवं नियोजन की समस्याएँ)	
1.	**अल्पविकसित देशों की विशेषताएँ**	**1–21**
	1. प्रस्तावना	4
	2. अल्पविकास की अवधारणा	4
	3. ब्रिटिश शासन में भारतीय अर्थव्यवस्था	5
	3.1 शोषण की अवस्थाएँ एवं उपनिवेशवाद	5
	3.2 शोषण की अवस्थाएँ एवं उपनिवेशवाद	6
	4. भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति	6
	4.1. प्रति-व्यक्ति वास्तविक आय का निम्न स्तर	6
	4.2. जनसंख्या	7
	4.3. बेरोजगारी, अल्प रोजगार, प्रच्छन्न बेरोजगारी एवं निम्न उत्पादिता	7
	4.4. गरीबी	8
	4.5. आय का वितरण	8
	4.6. पर्यावरण प्रदूषण एवं अवनति	9
	4.7. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान	9
	4.8. उत्पादन की दशाएँ	9
	4.9. द्वैतीय अर्थव्यवस्था	10
	4.10. विदेशी व्यापार	10
	4.11. अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का प्रभुत्व, निर्भरता एवं भेदन	10
	4.12. अनौपचारिक संस्थाओं की विद्यमानता	11
	4.13. अकुशल प्रशासन	11
	4.14. राजनैतिक भ्रष्टाचार	11
	4.15. सामाजिक विशिष्टताएँ	11
	4.16 आधारिक सुविधाओं का अभाव	11
	5. भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था	12
	5.1. प्रस्तावना	12
	5.2. उभरती हुई अर्थव्यवस्था की विशेषताएँ	13
	निष्कर्ष	15
	शीघ्र दोहराने के लिए संकेत	15
	दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न	16
	परिशिष्टः भारत में गरीबी	17

Scanned by TapScanner

2. आर्थिक विकास के कारक 23–41

1. आर्थिक विकास का अर्थ एवं माप 23
2. आर्थिक विकास के कारक 24
3. आर्थिक कारक 25
   - 3.1. प्राकृतिक संसाधन 25
   - 3.2. पूँजी निर्माण 25
   - 3.3. मानव-पूँजी निर्माण 26
   - 3.4. तकनीकी विकास 30
   - 3.5. आधारिक ढाँचा 31
   - 3.6. जनसंख्या एवं मानव संसाधन 33
4. गैर-आर्थिक कारक 36
   - 4.1. राजनैतिक एवं सामाजिक कारक 37
   - 4.2. आर्थिक राष्ट्रवाद 37
   - 4.3. भाग्य 38
5. विकास की सततता 38

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 39

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 40–41

3. जनसंख्या एवं आर्थिक विकास 42–71

1. मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास 43
   - 1.1. जनांककीय संक्रमण सिद्धाँत 44
   - 1.2. जनांककीय अवसरों की खिड़की 45
2. भारत में जनसंख्या की प्रवृत्तियाँ 45
   - 2.1. जनसंख्या की मात्रा 45
   - 2.2. राज्यानुसार जनसंख्या का वितरण 46
   - 2.3. जनसंख्या की वृद्धि दर 46
3. अन्य जनांककीय विशेषताएँ 48
   - 3.1. जीवन की प्रत्याशा 48
   - 3.2. शिशु मृत्यु दर 49
   - 3.3. जनसंख्या-घनत्व 49
   - 3.4. आयु संरचना 49
   - 3.5. लिंग अनुपात 50
   - 3.6. ग्रामीण शहरी अनुपात 50
   - 3.7. साक्षरता एवं विकास का स्तर 50
4. भारत में जनसंख्या की समस्या की प्रकृति 51

Scanned by TapScanner

5. जनसंख्या में वृद्धि के कारण 51
   5.1. ऊँची जन्म-दर 51
   5.2. घटती हुई मृत्यु-दर 53
6. आर्थिक उन्नति पर प्रभाव 53
   6.1. जनसंख्या आर्थिक विकास के इंजन के रूप में 54
   6.2. जनसंख्या आर्थिक विकास में बाधक के रूप में 54
7. भारत में जनसंख्या नीति की आवश्यकता 56
   7.1. जनसंख्या नीति के सघंटक 57
8. उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ 58
9. परिवार नियोजन को लोकप्रिय बनाने के लिए सुझाव 59
10. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 61
11. शहरीकरण 62
   11.1. शहरीकरण का अर्थ 62
   11.2. शहरी एवं ग्रामीण जनसंख्या का विकास 62
   11.3. शहरीकरण की मात्रा 63
   11.4. शहरीकरण के कारण 63
   11.5. शहरीकरण की चुनौतियाँ 65
   11.6. क्या और शहरीकरण उपयुक्त है 66
12. व्यावसायिक ढाँचा एवं आर्थिक विकास 67
   12.1. भारत में व्यावसायिक ढाँचा 68
   12.2. स्थैतिक व्यावसायिक ढाँचे के कारण एवं इसमें परिवर्तन के लिए सुझाव 69
   12.3. कार्रवाई की आवश्यकता 70

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 70

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 71

4. रोजगार एवं बेरोजगारी **72–86**

1. भारत में रोजगार 73
   1.1. श्रम-शक्ति का आकार 73
   1.2. कार्य सहभागिता दर 73
2. संगठित एवं असंगठित क्षेत्रों में रोजगार 74
   2.1. भारत में संगठित एवं असंगठित क्षेत्र 75
3. बेरोजगारी की प्रकृति 75
   3.1. बेरोजगारी के मानदण्ड 75
   3.2. कम-विकसित अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी 76
   3.3. बेरोजगारी के मापन की अवधारणाएँ 77
4. भारत में बेरोजगारी की समस्या 78
   4.1. समस्या का स्वरूप 78

Scanned by TapScanner

4.2. बेरोजगारी की मात्रा एवं परिमाण

5. बेरोजगारी के कारण

6. पंच-वर्षीय योजनाओं में रोजगार

6.1. रोजगार रणनीति के तत्व

7. रोजगार सृजन कार्यक्रम

7.1. कार्यक्रमों का मूल्यांकन

7.2. सीमित सफलता के कारण

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न

5. भारत में आर्थिक नियोजन : समस्याएँ, उद्देश्य एवं मूल्यांकन 88–114

1. नियोजन का अर्थ एवं महत्त्व 89

1.1. आर्थिक नियोजन क्या है 89

1.2. आर्थिक नियोजन की प्रकृति एवं क्षेत्र 90

1.3. नियोजन का महत्त्व 90

2. भारत में आर्थिक नियोजन 91

2.1. नियोजन क्यों 91

2.2. पाँच वर्षों की युक्तिसंगतता 91

3. भारत में आर्थिक नियोजन के उद्देश्य 91

4. उद्देश्यों की सीमाएँ 94

5. योजनाओं के आकार 94

6. आर्थिक नियोजन की व्यूह-रचना 95

6.1. भारतीय नियोजन में व्यूह-रचना का उद्‌गम 95

6.2. व्यूह-रचना के प्रमुख अंग 95

6.3. व्यूह-रचना की कमियाँ 96

6.4. व्यूह-रचना में परिवर्तन 97

7. वित्तीय आबंटन का प्रतिरूप 98

7.1. आधारिक सुविधाओं में निवेश 100

8. योजनाकाल में निष्पादनता 101

9. निष्कर्ष एवं सीख 105

9.1. आर्थिक नियोजन को पुनर्जीवित करने के लिए सुझाव 106

10. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) 107

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 108

परिशिष्ट : नयी आर्थिक नीति, 1991 109

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 114

Scanned by TapScanner

6. बचत एवं निवेश का विकास **115–125**

1. बचत, निवेश एवं विकास 115
   1.1. भारत की विकास व्यूह-रचना में बचत एवं निवेश का स्थान 116
2. बचत की प्रवृत्तियाँ 117
   2.1. बचत की दर 117
3. बचतों की क्षेत्रीय संरचना 119
4. निवेश की प्रवृत्तियाँ 121
5. अर्थव्यवस्था में बचत की दर को बढ़ाने की व्यूह-रचना 123

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 125

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 125

7. भारत में योजनाओं का वित्तीयन **126–138**

1. संसाधनों का संघटन एवं इसका महत्त्व 127
2. योजनाओं में वित्तीय संसाधनों का संघटन 127
   2.1. सार्वजनिक क्षेत्र के संसाधन 127
   2.2. निजी क्षेत्र के संसाधन 127
3. सार्वजनिक क्षेत्र में योजना व्यय के वित्तीयन का प्रतिरूप 127
   3.1. योजनाओं के वित्तीयन के प्रमुख स्रोत 128
   3.2. समस्त योजना काल का विभाजन 128
4. निष्कर्ष 134
5. संसाधनों को बढ़ाने के लिए सुझाव 135
   5.1. घरेलू मोर्चा 135
   5.2. बाह्य मोर्चा 136

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 136

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 137

8. केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्ध **139–151**

1. सरकार का संघीय रूप 140
   1.1. संघीय वित्त के सिद्धाँत 140
2. संवैधानिक प्रावधान 140
3. वित्त आयोग 144
4. बारहवें वित्त आयोग की रिपोर्ट का आलोचनात्मक मूल्यांकन 146
5. केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्धों की समस्याएँ 148
   5.1. समाधान के लिए सुझाव 149
6. तेरहवाँ वित्त आयोग 150

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 151

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 151

Scanned by TapScanner

(खण्ड-ख : भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रीय पहलू)

9. भारत में कृषि का विकास 155–174

1. कृषि विकास : औद्योगीकरण का पूर्वाभास 155
   1.1. आर्थिक विकास में कृषि का योगदान 155
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका 156
3. भारत में कृषि का विकास (1950-2009) 156
   3.1. कृषि उपजों का उत्पादन 157
   3.2. कृषि विकास के संघटक 158
4. कृषि विकास का मूल्यांकन 158
   4.1. नियोजन से पहले के काल से तुलना 160
   4.2. विकास के सादृश्य स्तर पर अन्य देशों से तुलना 160
   4.3. सादृश्य समयावधि में अन्य देशों से तुलना 160
   4.4. लक्ष्यों से तुलना 160
   4.5. आवश्यकताओं से तुलना 161
   4.6. संभावनाओं से तुलना 161
   4.7. क्षेत्रीय असंतुलन 161
5. कृषि विकास की दीर्घकालिक समस्याएँ 162
6. भारतीय कृषि की उत्पादिता 162
   6.1. निम्न उत्पादिता के कारण 163
   6.2. कृषि उत्पादिता में वृद्धि के उपाय 163
7. नयी कृषि व्यूह-रचना एवं हरित क्राँति 164
   7.1. नई व्यूह-रचना के संघटक 166
   7.2. हरित क्राँति के प्रभाव 167
   7.3. अपेक्षित नयी कृषि व्यूह-रचना 168
8. नयी आर्थिक नीति एवं कृषि 170
   8.1. नीति में प्रमुख परिवर्तन 171
9. नयी कृषि नीति, 2000 171
10. कृषकों के लिए राष्ट्रीय नीति 171

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 172

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 173

10. भारत में कृषि वित्त 174–190

1. ऋण एवं कृषि विकास में सम्बन्ध 176
   1.1. ऋण के रूप 176

Scanned by TapScanner

1.2 ऋणों की समयावधि 176
2. भारत में कृषि वित्त 177
2.1. ऋण की आवश्यकताओं का अनुमान 177
2.2. कृषि ऋण के स्रोत 177
3. कृषि ऋण के सम्बन्ध में नीतिगत विकास 180
4. कृषि ऋण नीति का प्रभाव 182
4.1. सकारात्मक लाभ 182
4.2. बहु-एजेन्सी विचारधारा की समस्याएँ 182
5. भविष्य के लिए सुझावित नीति 183
6. कृषि वित्त में संस्थागत एजेन्सियाँ 183
6.1. सहकारिताएँ 183
6.2. वाणिज्य बैंक 185
6.3. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 187
6.4. कृषक सेवा समितियाँ 188
6.5. कृषि एवं ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय बैंक 188
6.6. भारतीय रिजर्व बैंक 189
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 190
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 190

11. कृषि विपणन एवं कृषि पदार्थों का मूल्यन **191–281**
1. भारत में कृषि विपणन 191
1.1. कृषि विपणन के दोष 192
2. कृषि विपणन प्रणाली में सुधार के लिये सुझाव एवं सरकारी उपाय 193
3. कृषि कीमतों की भूमिका 197
4. भारत में कृषि कीमत नीति 197
4.1. C.A.C.P. के कार्य 198
4.2. समन्वित कीमत नीति के उद्देश्य 198
4.3. नीति के संघटक 199
4.4. कमियाँ एवं सुझाव 200
4.5. कृषि कीमत नीति के पुनर्गठन के लिए सुझाव 200
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 201
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 202
परिशिष्टः भारत में खाद्य समस्या एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली

12. भारत में भूमि सुधार, कृषि श्रम एवं तकनीकों का चयन **209–23**
1. भारत में कृषि जोतों का आकार 21
1.1. ढाँचागत परिवर्तन का स्पष्टीकरण 21

Scanned by TapScanner

2. भू-धारण एवं भूमि सुधार 211
3. भूमि सुधारों की प्रकृति एवं महत्त्व 212
3.1. स्वतंत्रता के समय कृषि ढाँचा 212
3.2. भारत में भूमि सुधार के उद्देश्य 213
3.3. भूमि सुधार एवं कृषि का विकास 213
4. भारत में भूमि सुधारों की प्रगति 214
4.1. जमींदारी प्रणाली का उन्मूलन 214
4.2. काश्तकारी सुधार कानून 215
4.3. कृषि जोतों की उच्चतम सीमा या हदबन्दी 216
4.4. जोतों की चकबन्दी 218
4.5. भूमि के रिकार्ड 218
5. भूमि सुधारों की धीमी प्रगति के कारण 218
6. सुधार के लिये सुझाव 220
7. भारत में कृषि श्रम 221
7.1. कृषि श्रम की विशेषताएँ 221
7.2. भारत में कृषि श्रमिकों का विकास 222
7.3. कृषि श्रमिकों की आर्थिक दशा 222
7.4. भारत में कृषि श्रमिकों के विकास के कारण और उनकी कमजोर आर्थिक स्थिति 224
7.5. सरकारी सहायता के उपाय 225
8. कृषि पद्धतियाँ एवं तकनीकें 226
9. प्रौद्योगिकी एवं जीव-प्रौद्योगिकी का चयन 228
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 229
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 230
13. भारत में औद्योगिक विकास एवं नीति **232–254**
1. प्रस्तावना 233
1.1. औद्योगीकरण एवं आर्थिक विकास 233
2. भारत में औद्योगिक विकास 233
औद्योगीकरण का प्रतिरूप 235
3. भारत में औद्योगिक नीति 237
4. 1991 से पहले औद्योगिक नीति 237
5. 1991 के बाद औद्योगिक नीति 238
6. भारत में औद्योगिक लाइसेंस नीति 241
6.1. औद्योगिक लाइसेंस नीति के उद्देश्य 241
6.2. औद्योगिक लाइसेंस के लिये कानूनी ढाँचा 242
7. प्रतियोगिता अधिनियम, 2002 246
8. औद्योगिक नीति की कमियाँ 246

Scanned by TapScanner

9. भविष्य के लिए रणनीति 248
10. औद्योगिक वित्त 248
6.1. औद्योगिक वित्त की आवश्यकता 248
6.2. औद्योगिक वित्त के स्रोत 249
6.3. भारत में औद्योगिक वित्त के स्रोत 249
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 253
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 254
14. सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की भूमिका **255–275**
1. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का अर्थ एवं युक्तिसंगतता 256
1.1. सार्वजनिक क्षेत्र का तर्काधार 257
2. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का विकास 258
3. सार्वजनिक उद्यमों की भूमिका एवं योगदान 259
4. सार्वजनिक उद्यमों की निष्पादनता 262
4.1. वित्तीय एवं भौतिक निष्पादनता 262
4.2. गैर-मौद्रीकृत उद्देश्य 262
4.3. असफलताएँ 263
4.4. सार्वजनिक उद्यमों की खराब निष्पादनता के कारण 263
5. सार्वजनिक उद्यमों की निष्पादनता में सुधार के लिये सुझाव 265
6. भारत में निजी क्षेत्र 266
6.1. अर्थ एवं कार्य 266
6.2. भूमिका एवं निष्पादनता 267
6.3. निजी क्षेत्र की समस्याएँ 269
6.4. समाधान के लिए सुझाव 270
7. अर्थव्यवस्था का निजीकरण 270
7.1. निजीकरण का अर्थ 270
7.2. निजीकरण के पक्ष में तर्क 270
7.3. निजीकरण के विपक्ष में तर्क 271
7.4. निजीकरण की ओर प्रयास 272
7.5. विनिवेश 272
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 274
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 274
15. भारत में लघु-पैमाने के उद्योग **276–289**
1. लघु क्षेत्रः अर्थ एवं क्षेत्र 277
1.1. कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योग 277

Scanned by TapScanner

1.2. लघु उद्योग एवं बड़े उद्योग
2. लघु उद्योगों की प्रासंगिकता
2.1. लघु उद्योगों के पक्ष में तर्क
3. लघु–पैमाने के क्षेत्र का योगदान
4. लघु उद्योगों की समस्याएँ
5. लघु उद्योगों की सहायता के उपाय
5.1. सुझावित उपाय
6. लघु एवं बड़े उद्योगों का सह-अस्तित्व
7. लघु उद्योगों के लिए नयी नीति, 1991
7.1. नयी नीति के उद्देश्य
7.2. नयी नीति की विशेषताएँ
8. लघु-पैमाने के उद्योगों के लिये नवीनतम प्रोत्साहन
9. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 की प्रमुख विशेषताएँ
शीघ्र दोहराने के लिए संकेत
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न
16. भारत में विदेशी पूँजी एवं बहु-राष्ट्रीय निगम 290–340
1. पूँजी स्थानान्तरण एवं आर्थिक विकास
2. विदेशी पूँजी के स्रोत
3. बहु-राष्ट्रीय निगम
3.1. बहु-राष्ट्रीय निगमों की विशेषताएँ
3.2. बहु-राष्ट्रीय निगमों का महत्त्व
4. भारत में विदेशी पूँजी
4.1. विदेशी पूँजी के प्रति सरकार की नीति
4.2. नयी आर्थिक नीति एवं नवीनतम परिवर्तन
4.3. श्रेणियों के अनुसार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अंतर्वाह
4.4. भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अंतर्वाह
4.5. क्षेत्रवार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अंतर्वाह
4.6. नयी नीति की आलोचनात्मक समीक्षा
4.7. अन्तर्वाहों की आलोचनाएँ
4.8. सुझाव
5. विदेशी संस्थागत निवेशक
5.1. FIIs के लिए दिशा-निर्देश
5.2. लाभ
5.3. सीमाएँ
5.4. सुझाव

Scanned by TapScanner

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत 302
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न 303
17. भारत का विदेशी व्यापार एवं भुगतान शेष 304–331
1. व्यापार एवं आर्थिक विकास 305
1.1. विदेशी व्यापार का आर्थिक विकास में योगदान 305
1.2. रुकावटें 306
1.3. व्यापार नीति एवं व्यूह-रचना 306
1.4. अन्तर्मुखी अनुकूलन एवं बाहिर्मुखी अनुकूलन 306
2. योजना काल में विदेशी व्यापार का विश्लेषण 306
2.1. विदेशी व्यापार की मात्रा 307
2.2. विदेशी व्यापार की रचना 307
2.3. विदेशी व्यापार की दिशा 307
3. भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा 307
3.1. निर्यात 308
3.2. आयात 309
4. भारत के विदेशी व्यापार की रचना 309
4.1. निर्यात 309
4.2. आयात 311
4.3. निष्कर्ष 312
5. भारत के विदेशी व्यापार की दिशा 312
5.1. निर्यात 312
5.2. आयात 312
5.3. निष्कर्ष 313
6. भुगतान शेष एवं घाटे की समस्या 314
6.1. चालू खाता 314
6.2. पूँजीगत खाता 314
6.3. भुगतान शेष एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ 314
7. भारत के भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ 314
7.1. भुगतान शेष में घाटे के कारण 316
7.2. दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य 317
8. घाटे की समस्या एवं व्यापार नीति 319
9. निर्यात संवर्धन के उपाय 320
10. निर्यात व्यूह-रचना 322
10.1. निर्यात व्यूह-रचना के लिये सुझाव 322
11. नयी विदेशी व्यापार नीति, 2009-14 322

Scanned by TapScanner

12. विश्व व्यापार संगठन

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत

दिल्ली विश्वविद्यालय प्रश्न

18. कीमतें : मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियाँ

1. प्रस्तावना

2. मुद्रा स्फीति एवं आर्थिक विकास

2.1. प्रकृति, कारण एवं उपाय

2.2. मुद्रा स्फीति आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है

2.3. मुद्रा स्फीति आर्थिक विकास को अवरुद्ध करती है

3. योजनाकाल में कीमतों की प्रवृत्तियाँ

4. भारत में मुद्रा स्फीति के कारण, परिणाम एवं उपाय

4.1. मुद्रा स्फीति के कारण

4.2. मुद्रा स्फीति के परिणाम

4.3. उपाय

शीघ्र दोहराने के लिए संकेत

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रश्न

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रश्न पत्र (2006–2010)

Scanned by TapScanner